घुरें कोहु घणी, मूरख माया राम खों,
विया पिटींदा केतिरा, मुंहं ते हथ हणी,
तूं भी नींदें कान का, कोड्री साणु खणी,
सारि संभारि धणी, त सुखी थिएं सामी चए.

सामी जी कहते हैं, हे मूर्ख मनुष्य! तुम राम (परमेश्वर) से बहुत माया (धन दौलत) क्यों माँगते हो? अरे, न जाने कितने लोग सिर धुन कर, पछताते हुए (खाली हाथ) चले गये। तुम भी अंत में अपने साथ कौड़ी भी नहीं ले जाओगे। इसलिए तुम जल्द ही जागृत होकर प्रभु का स्मरण करो। तभी तुम यथार्थ में सुखी हो सकोंगे। परमेश्वर का स्मरण करने से ही तुम्हें सच्चा सुख मिल सकेगा।

मनुष्य-देह बड़े भाग्य से मिलती है। मनुष्य के रूप में आ कर जीवन को सार्थक बनाना हमारा कर्त्तव्य होता है। परंतु साधारण जीव मोक्ष-मुक्ति की कामना करने की अपेक्षा माया के जाल में फँस जाता है। मनुष्य का मन धन के लोभ में लिप्त हो जाता है। ऐसी अवस्था में वह विषयों के चक्कर में फँस कर स्वयं को विस्मृत कर दिन-रात बस यही सोचता रहता है कि किस प्रकार धन का संग्रह हो। लोभ की प्यास कभी बुझने वाली नहीं होती। अधिक लालच मनुष्य की समझ को नष्ट कर देती है। मनुष्य की आँखों पर पर्दा पड़ जाता है। कबीर के शब्दो में,

कबीर औंधी खोपड़ी, कबहूँ धापै नाहिं।
तीन लोक की संपदा, कब आवै घर माहिं।।

धन का लोभी मनुष्य मानो धन कमाने के लिए ही जीता है। वह प्रभु-स्मरण आत्मज्ञान अथवा आध्यात्मिक साधना से दूर ही रहता है। वह यह नहीं सोचता कि अंतिम समय में यह माया, धन-दौलत आदि काम में नहीं आने वाला है। यह सब क्षण-भंगुर है। अंत में केवल प्रभु का नाम स्मरण ही काम में आने वाला है नहीं। मृत्यु के समय धन साथ में चलने वाला नहीं है अपितु 'राम' साथ में चलने वाला है। क्योंकि वही शाश्वत है। वही मोक्ष-मुक्ति दिलाने वाला है। वही जीवन सफल बनाने वाला है। अत: उसी राम का , परमेश्वर का स्मरण करना चाहिए। सच्चा सुख और संतोष वही देने वाला है। कबीर कहते हैं-

सांई इतना दीजिए, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

■